बरसात का एक दिन

"वर्षा ऋतु , ऋतुओं की रानी होती है, जबकि बसंत, ऋतुओं का राजा होता है।"

उपर्युक्त कथन बिल्कुल सथीक, स्पष्ट और सार्थक है। भारत ऋतुओं का देश है। यहाँ पर समय-समय पर ऋतु परिवर्तन होता रहता है। यहाँ पर क्रम से ग्रीष्म, वर्षा ,शरद ,शीत ,हेमंत पतझड़ ,बसंत आदि ऋतुएँ आती- जाती हैं।

पिछले साल मई के महीने में खूब गर्मी पड़ रही थी। सभी प्राणी गर्मी से बेहाल थे। अचानक एक दिन स्कूल से घर वापस लौटते समय काले बादल उमड़ते हुए दिखाई देने लगे। इस दृश्य को देखकर मैं खुशी से झूम उठी। मैं घर पहुँची ही थी कि रिमझिम-रिमझिम बरसात होने लगी। मैं हल्की भीग कर घर के अंदर पहुँची। भोजन के बाद मैं छत पर चला गई और तेज़ बरसात का आनंद लेने लगी। मुझे गर्मी के तपन से राहत मिल गई थी।

तेज़ बरसात के बाद मौसम सुहाना हो गया था। चारों तरफ मेंढक की टर्र -टर्र की आवाज सुनाई दे रही थी। चिड़ियों के चहकने की आवाज़ सुनाई भी दे रही थी। मैंने अपने छत पर पहले बरसात का खूब आनंद लिया और पहली बरसात में खूब भीगी । मेरे घर के बगीचे के पत्ते हरे भरे और खिले नजर आ रहे थे। मैंने मिट्टी की खुशबू को भी पहली बार अनुभव कर, उसका आनंद लिया। इसमें कोई संदेह नहीं है कि पहली बरसात का आनंद ही कुछ और है। सभी प्राणी को असीम शांति मिलती है और सभी प्राणियों, गर्मी से राहत का अनुभव भी करते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि वर्षा ऋतु का सभी इंतजार करते हैं। किसान भाइयों के लिए वर्षा ऋतु किसी वरदान से कम नहीं है । वे नए फसल उगाने की तैयारी करने लगते हैं। धरती की प्यास बुझ जाती है। धरती का तापमान गिर जाता है। मौसम एकदम शांत व शीतल हो जाता है।

वैसे तो सभी ऋतु का अपना अलग ही आनंद होता है, लेकिन वर्षा ऋतु की तो बात ही निराली है। रिमझिम बारिश में भीगना सभी को अच्छा लगता है। मोर और पपीहे की बोली सबको आकर्षित करती है। कभी-कभी अतिवृष्टि के कारण बाढ़ भी आ जाती है। इस लिए हमें सावधान रहना चाहिए। हमें वर्षाकाल में भीगना नहीं चाहिए। पहली बरसात में भीगना बहुत ही नुकसानदायक होता है। इससे सर्दी और जुकाम का खतरा बढ़ जाता है। अतः हमें सावधान रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त सच्चाई यह है कि हमें सभी ऋतु और मौसम का आनंद लेना चाहिए। सभी मौसम अपनी छटा बिखेरती हैं। धरती की सुंदरता में चार चाँद लगा देती है। सचमुच, वर्षा काल के मौसम का आनंद ही कुछ और है।

अंत में वर्षा ऋतु के लिए इतना ही कहना चाहती हूं कि :-

"बारिश की बूंदे को देखो,

मनोरम है इसकी रस धार।

मोर -पपीहे के कूक से,

अनुपम लगते है संसार।।"

- अंशिका मौंगा
कक्षा १०सी

बारिश

ऋतुएँ प्रकृति के ऐसे तत्व हैं जो इसकी सुंदरता को बढ़ाते हैं। हमारी मातृभूमि, भारत, को प्रकृति के विभिन्न मौसमों का कोमल खेल उपहार स्वरूप दिया गया है। इन सभी चंचल ऋतुओं में से वर्षा ऋतु का एक महत्वपूर्ण स्थान है।

भारत में बारिश का मौसम जून के मध्य में शुरू होता है और सितंबर के मध्य में समाप्त होता है। यह मौसम कृषि पद्धतियों के आगमन का प्रतीक है। यह मौसम अत्याचारी गर्मी के बाद आम आदमी की राहत और उत्साह को उजागर करता है।

बारिश की एक-एक बूंद के साथ, सड़कों पर उतरते छोटे बच्चों के चेहरों पर मुस्कान की शिकन आ जाती है। यह देश के भूजल स्तर और जलाशयों की भरपाई करता है। बारिश की बूंदों सीमेंट की सतहों की दरारों को लहरदार शोर से भर देती है और गर्जन वाली हवा अतीत में भाग रहे लोगों के गालों को सहलाती है। तूफानों के दौरान, हर कोई गतिविधि की स्थिति में होता है, पूरी तरह से दहशत और भय में घुल जाता है।लेकिन कुछ लोग हैं जो बारिश की लहरदार बूंदों का आनंद लेते हैं। जैसे ही बादल गर्जना करते हैं और प्रकाश प्रहार करते हैं, वे खुशी से झूम उठते हैं। वे प्रकृति में आराम की तलाश करते हैं।भारत एक कृषि-उद्योग देश है, जो बारिश पर निर्भर हैं। भारत की कृषि भूमि दक्षिण-पश्चिम मॉनसून द्वारा सिंचित है। गेहूं, चावल, दालें जैसी फसल को उगाने के लिए वर्षा की आवश्यकता होती है।

मॉनसून सामाजिक त्योहारों और रीति-रिवाजों को चिह्नित करता है। मॉनसून न केवल आनंद का स्रोत है बल्कि आर्थिक और सामाजिक विकास का भी स्रोत है। वे आम आदमी के जीवन को प्रभावित करते हैं और एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

- प्रमा सुराणा
कक्षा ७ दी

वर्षा

एक बार मैं खिड़की के पास, यूँ ही खड़ी थी,
की हवा मेरे मुँह से बजकर ठंडक देने लगी।
काले घने मेघ होने लगी बड़ी,
और बस वर्षा आ ही गई हमारी गली।

वर्षा है ही एक जादुई छड़ी,
जहाँ जाए, वहाँ खुशियाँ लाई।
किन्तु यह कहना है सबके साथ धोखाधड़ी,
क्योंकि संसार में ऐसा कुछ नहीं जिसमें बुराई न हो।

वर्षा आती तो है, किन्तु केवल आनंद के लिए नहीं,
वर्षा आती तो है, किन्तु केवल केश को उड़ाने के लिए नहीं,
वर्षा आती तो है, किन्तु केवल प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन करने नहीं,
वर्षा आती है, सीख देने के लिए।

यह सीख कि दुख को बह जाने दो,
यह सीख कि हमें हर ओर ठंडक फैलानी चाहिए,
यह सीख कि प्रकृति में भी बुराइयाँ होती है,
किन्तु वह बुराई हमारे अच्छाई के लिए होती है।

कहीं बाढ़ आना या कहीं सूखा पड़ना,
दिखाती है हमें, कि अति में कभी मत जाना।
वर्षा के सुगंध में मग्न सर्प,
दिखाती है कि चंदन में भी ज़हर हो सकता है।

अकस्मात चमक उठा सूरज वह निराला,
जिसके तेज ने मुझे मेरे विचारों से निकाला।
इंद्रधनुष को देखती हुई रुद्राक्षी,
कहती हूँ कि प्रकृति वह माता है,
जो अपने अनेक रूप के द्वारा, संतान को शिक्षा प्रदान करती है।

- रुद्राक्षी दास
कक्षा- ११ एफ